

---

# Paramarthashlokadvayam

---

## परमार्थश्लोकद्वयम्

---

### Document Information

Text title : Paramarthashlokadvayam

File name : paramArthashlokadvayam.itx

Category : misc, vedanta

Location : doc\_z\_misc\_general

Proofread by : Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

Description/comments : Ramanuja Stotramala

Latest update : November 23, 2019, July 5, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

July 5, 2021

*sanskritdocuments.org*

---


परमार्थश्लोकद्वयम्



श्रीवात्स्यवरदगुरुभिरनुगृहीतं  
श्रीरस्तु ।  
श्रीमते हयग्रीवाय नमः ।  
श्रीमते रामानुजाय नमः ॥  
वन्देऽहं वरदार्यं तं वत्साभिजनभूषणम् ।  
भाष्यामृतप्रदानाद्यः सञ्जीवयति मामपि ॥  
सत्सङ्गाद्भवनिःस्पृहो गुरुमुखाच्छ्रीशं प्रपद्यात्मवान्  
प्रारब्धं परिभुज्य कर्मशकलं प्रक्षीणकर्मान्तरः ।  
न्यासादेव निरङ्कुशेश्वरदयानिर्लूनमायान्वयः  
हार्दानुग्रहलब्धमध्यधमनिद्वारा बहिर्निर्गतः ॥ १ ॥  
मुक्तोऽर्चिर्दिनपूर्वपक्षषडुदङ्मासाब्दवातांशुम-  
द्धौविद्युद्वरुणेन्द्रधातुमहितस्सीमान्तसिन्ध्वाप्लुतः ।  
श्रीवैकुण्ठमुपेत्य नित्यमजडं तस्मिन् परब्रह्मणः  
सायुज्यं समवाप्य नन्दति समं तेनैव धन्यः पुमान् ॥ २ ॥  
प्रातर्नित्यानुसन्धेयं परमार्थं मुमुक्षुभिः ।  
श्लोकद्वयेन संक्षिप्तं सुव्यक्तं वरदोऽब्रवीत् ॥ ३ ॥  
इति परमार्थश्लोकद्वयं समाप्तम् ।

Proofread by Aruna Narayanan narayanan.aruna at gmail.com

---

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

